स्नातकोत्तर हिन्दी द्वितीय सत्रार्द्ध

हिन्दी विभाग

पत्र संख्या - 06

* मीराँबाई की जीवन परिचय *

हिन्दी के कृष्ण भक्त कवियों में मीराँबाई का महत्वपूर्ण स्थान है। मीराँबाई के जन्म काल के बारे में ठीक से जानकारी नहीं है। कुछ विद्वानों के अनुसार मीराँबाई का जन्म राजस्थान के मेड़ता में सन 1498 में एक राज परिवार में हुआ था। उनके पिता रतन सिंह राठौर एक छोटे से राजपुत रियासत के शासक थे। मीराँबाई की माता का नाम विरकुमारी थी। वे अपनी माता-पिता की इकलौती संतान थी। जब वे छोटी थी तभी उनकी माता का निधन हो गया था। मीराँबाई का लालन-पालन उनके दादा की देख-रेख में हुआ जो भगवान विष्णु के गंभीर उपासक थे और एक योद्धा होने के साथ-साथ भक्त हृदयभी थे और साधु संतों का आना जाना इनके यहाँ ही लगा रहता था। इस प्रकार मीरा बचपन से ही साधु संतों और धार्मिक लोगों के सम्पर्क में आती रही। बचपन में एक बार उनकी माँ ने उन्हें भगवान कृष्णजी की एक मूर्ति दी, जिसके साथ वह हमेशा खेलती, गाती और बातें किया करती थी। मीरा के दादा राव दूदा थे। राणासांगा के पुत्र भोजराज के साथ मीरा का विवाह 1516 ई० में हुआ। कुछ वर्षों में ही भोजराज मुगलों के साथ युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गए और मीरा विधवा हो गई।

बचपन से ही मीरा कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम रखती थी। वे उन्हें ही अपना प्रिय और पति मानती थी। मीरा के गुरु संत कवि रैदास थे। मीरा की भक्ति कान्ता, माधुर्य और दाम्पत्य भाव की मानी जाती है। पति के परलोक के बाद मीरा की भक्ति दिन प्रतिदिन बढ़ती गई।

के मन्दिरों में जाकर वहाँ मौजूद कृष्ण भक्तों के सामने कृष्ण के मूर्ति के आगे रहती थी। मीराँबाई का कृष्ण भक्ति में नाचना और गाना राज परिवार को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने कई बार मीराँबाई को विष देकर मारने की भी कोशिश की गई। घर वालों के इस प्रकार के व्यवहार से परेशान होकर वे द्वारका और वृन्दावन चली गई। वह जहाँ जाती थी वहाँ लोगों का सम्मान मिलता था लोग उन्हें देवी के जैसा प्यार और सम्मान देते थे।

मीराँबाई के चार काव्य ग्रंथ माने जाते थे - ① नरसीजी का मायरा ② गीत गोविन्द टीका ③ राग गोविन्द ④ राग सोरठा इसके अतिरिक्त मीराँपदावली, मीरा की मल्हार, गर्वागीत। मीराँबाई को भक्ति के तपोवन की शकुन्तला और राजस्थान के मरुस्थली की मंदाकिनी कही जाती है। मीराँबाई की काव्यगत विशेषताओं के विषय में मीरा के पद राजस्थानी मिश्रित ब्रज भाषा में है। कोई चमत्कार दिखाने के लिए उन्होंने काव्य नहीं रचा। भगवान के प्रति अनन्य अनुराग उनके पदों में सहज रूप से व्यक्त हुआ है। मीरा का काव्य माधुर्यभाव का जीवन्त रूप है। वे कृष्ण को ही अपना पति मानकर उनकी उपासना करती थी। उनके लिए संसार में कृष्ण के अतिरिक्त दूसरा पुरुष अस्तित्व में ही नहीं था। कृष्ण के विरह में वे व्याकुल रहती थी, यही व्याकुलता उनके पदों में भी है। शृंगार के वियोग पक्ष का चित्रण उनके पदों में बहुत मार्मिक है।

मीरा के पदों में प्रसाद एवं माधुर्य गुणों की प्रचुरता है। मीरा की कविता का प्रधान गुण सादगी एवं सरलता है। कृष्ण के प्रेम की दिवानी मीरा पर सूफियों के प्रभाव को देखा जा सकता है।

मीरा का समय बहुत बड़ी राजनैतिक उथल-पुथल का समय रहा है। बाबर का हिन्दुस्तान पर हमला और प्रसिद्ध खानवा का युद्ध उसी समय हुआ था। इस सभी परिस्थितियों के बीच मीरा का रहस्यवाद और भक्ति की निर्गुण मिश्रित सगुण पद्धति सर्वमान्य बनी। मीराँ-बाई की निधन 1546 ई० द्वारका में हुई। मीराँबाई एक कृष्ण भक्त और कवयित्री थीं। उनकी कविता कृष्ण भक्ति के रंग में रंगकर और गहरी हो जाती है। मीराँबाई ने कृष्ण भक्ति के स्फुट पदों की रचना की है। मीरा कृष्ण की भक्त है।

प्रस्तुतकर्ता

बेनाम कुमार

(अतिथि शिक्षक)

हिन्दी विभाग

राजनारायण महाविद्यालय हाजीपुर

(BRABU MUZAFFARPUR)

मो० नं० - 8292271041

ईमेल - benamkumar13@gmail.com

दिनांक

07/08/2020